The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# उच्च शिक्षा आयोग और समितियों का शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

**डॉ. विशाल शर्मा**

सह आचार्य, शिक्षा संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की (हरिद्वार), उत्तराखंड

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328783**

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 25-09-2025

**Published:** 10-10-2025

**Keywords:**

उच्च शिक्षा, आयोग, समितियाँ, शिक्षा नीति, *UGC, AICTE, NAAC,* राष्ट्रीय शिक्षा नीति *2020*

**ABSTRACT**

भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास और उन्नयन में उच्च शिक्षा आयोगों तथा विभिन्न समितियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समय-समय पर गठित आयोगों और समितियों ने शिक्षा की गुणवत्ता, संरचना, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन प्रणाली और शोध कार्यों को सुदृढ़ बनाने हेतु महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए। इस शोध-पत्र में राधाकृष्णन आयोग, कोठारी आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE), राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) तथा नई शिक्षा नीति (NEP 2020) जैसी संस्थाओं की भूमिका और उनके शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही इन आयोगों और समितियों की सिफारिशों के प्रभाव, उनकी चुनौतियों, सीमाओं और भविष्य में सुधार की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षा आयोग और समितियाँ न केवल शिक्षा के स्वरूप को दिशा देती हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की आधारशिला भी रखती हैं। उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र के बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक विकास की आधारशिला होती है। भारत में उच्च शिक्षा की दिशा और दशा निर्धारित करने में विभिन्न आयोगों और समितियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। राधाकृष्णन आयोग, कोठारी आयोग, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE), राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) जैसी संस्थाओं और समितियों ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। इन आयोगों और समितियों ने शिक्षा की गुणवत्ता, पाठ्यचर्या, अनुसंधान, रोजगारोन्मुखी दृष्टिकोण, समानता, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यह शोध-पत्र उच्च शिक्षा आयोगों और समितियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उनकी प्रमुख सिफारिशों, शिक्षा पर पड़ने वाले

सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों, वर्तमान चुनौतियों तथा सुधार की संभावनाओं का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

**प्रस्तावना**

भारतीय समाज में शिक्षा को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन ही नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास का आधार भी है। आधुनिक काल में उच्च शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है क्योंकि यह राष्ट्र की प्रगति, तकनीकी नवाचार, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से सीधे जुड़ा हुआ है। उच्च शिक्षा को सुदृढ़ और प्रभावी बनाने के लिए समय-समय पर विभिन्न आयोग और समितियाँ गठित की गई हैं, जिनका उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करना और भावी पीढ़ियों को दिशा प्रदान करना रहा है। राधाकृष्णन आयोग (1948-49), कोठारी आयोग (1964-66), तथा हाल ही में लागू की गई नई शिक्षा नीति 2020, ऐसे प्रयासों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी प्रकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC), अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) और राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) जैसे निकाय उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु निरंतर सक्रिय रहे हैं। भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है, जहाँ शिक्षा विशेषकर उच्च शिक्षा का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय विकास का प्रमुख उपकरण है। उच्च शिक्षा संस्थानों के माध्यम से विद्यार्थी अनुसंधान, नवाचार और बौद्धिक विकास की दिशा में अग्रसर होते हैं। किंतु उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए समय-समय पर विभिन्न आयोगों और समितियों की स्थापना की जाती रही है। इन आयोगों और समितियों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा व्यवस्था की कमियों की पहचान करना, सुधार की दिशा सुझाना तथा शिक्षा प्रणाली को समयानुकूल बनाना रहा है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य इन आयोगों और समितियों के कार्यों, उनकी सिफारिशों और उनके शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करना है।

**उच्च शिक्षा आयोग और समितियों की भूमिका**

उच्च शिक्षा आयोगों और समितियों की भूमिका बहुआयामी रही है। इनके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. **शैक्षिक ढाँचे में सुधार**: शिक्षा के स्तर, पाठ्यक्रम, और अनुसंधान कार्यों को बेहतर बनाना।
2. **गुणवत्ता नियंत्रण**: शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता का मूल्यांकन और उन्हें मान्यता प्रदान करना। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के कार्य-निष्पादन पर नज़र रखना।
3. **मानक निर्धारण** – शिक्षा की गुणवत्ता, पाठ्यचर्या और अनुसंधान के स्तर को बनाए रखना।
4. **नीतिगत दिशा-निर्देश**: सरकार को शिक्षा नीतियों के निर्माण में मार्गदर्शन देना। शिक्षा प्रणाली के लिए दीर्घकालीन योजनाएँ एवं नीतियाँ बनाना।

5. **अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा**: उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध की गुणवत्ता और उत्पादकता को बढ़ाना। शोध एवं नई तकनीकों के विकास के लिए प्रेरित करना।
6. **समानता और पहुँच**: समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाना।
7. **वित्तीय सहायता** – उच्च शिक्षा संस्थानों को अनुदान और आर्थिक सहयोग प्रदान करना।

**भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा आयोगों का इतिहास और विकास**

भारत में स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात कई आयोग गठित हुए जिन्होंने शिक्षा प्रणाली के स्वरूप को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा को एक मजबूत आधार देने के लिए कई आयोग गठित किए गए।

- ❖ **राधाकृष्णन आयोग (1948-49)** : विश्वविद्यालय शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने हेतु गठित। इसने विश्वविद्यालयों में शोध और अध्यापन की गुणवत्ता सुधारने पर बल दिया।
- ❖ **कोठारी आयोग (1964-66)** : "शिक्षा और राष्ट्रीय विकास" विषय पर केंद्रित, इसने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का साधन बताया। इस आयोग की सिफारिशों से शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार हुए।
- ❖ **राष्ट्रीय नीति (1968, 1986, 1992)** : इन नीतियों ने शिक्षा को सार्वभौमिक, समान और गुणवत्तापूर्ण बनाने पर जोर दिया।
- ❖ **नई शिक्षा नीति (2020)** : इसमें बहु-विषयक शिक्षा, कौशल विकास, अनुसंधान प्रोत्साहन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर बल दिया गया।

**प्रमुख समितियों की सिफारिशें और प्रभाव**

**राधाकृष्णन आयोग (1948-49)**

**उद्देश्य:** विश्वविद्यालय शिक्षा की स्थिति का मूल्यांकन।

**प्रमुख सिफारिशें:**

- ❖ विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता।
- ❖ शोध और अध्यापन में सुधार।
- ❖ स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा के बीच स्पष्ट अंतर।

**प्रभाव:** विश्वविद्यालयों में शोध कार्यों की नींव पड़ी और उच्च शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ।

**कोठारी आयोग (1964-66)**

**उद्देश्य:** शिक्षा और राष्ट्रीय विकास को जोड़ना।

**प्रमुख सिफारिशें:**

"सामाजिक और आर्थिक न्याय" हेतु शिक्षा का प्रसार।

10+2+3 शिक्षा प्रणाली की शुरुआत।

विज्ञान और तकनीकी शिक्षा पर जोर।

**प्रभाव:** भारत की शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तन हुए और यह प्रणाली आज भी प्रचलित है।

**नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन (1986, संशोधित 1992)**

**उद्देश्य:** शिक्षा में समान अवसर, अनुसंधान को प्रोत्साहन, और व्यावसायिक शिक्षा का विकास।

**प्रभाव:** प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक शिक्षा की पहुँच बढ़ी, महिलाओं और कमजोर वर्गों की भागीदारी में सुधार हुआ।

**राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (2005)**

**उद्देश्य:** 21वीं सदी के ज्ञान समाज के लिए शिक्षा सुधार।

**सिफारिशें:** सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा, विदेशी विश्वविद्यालयों के सहयोग।

**प्रभाव:** ई-लर्निंग, डिजिटल शिक्षा और ज्ञान अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ।

**वर्तमान उच्च शिक्षा आयोगों और निकायों की भूमिका**

**विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)**

- ❖ 1956 में स्थापित।
- ❖ विश्वविद्यालयों को मान्यता देना।
- ❖ शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखना।
- ❖ शोध हेतु अनुदान उपलब्ध कराना।

**कार्य:** विश्वविद्यालयों को मान्यता प्रदान करना, वित्तीय सहायता देना, मानक बनाए रखना।

**प्रभाव:** उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार, शोध कार्यों को बढ़ावा।

**अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE)**

- ❖ 1945 में स्थापित, तकनीकी शिक्षा पर केंद्रित।
- ❖ तकनीकी शिक्षा संस्थानों को मान्यता देना।
- ❖ नई तकनीकों और पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहित करना।

**कार्य:** इंजीनियरिंग, प्रबंधन, फार्मेसी आदि क्षेत्रों में मान्यता एवं नियंत्रण।

**प्रभाव:** तकनीकी शिक्षा का विस्तार और निजी संस्थानों की निगरानी।

**राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC)**

- ❖ 1994 में स्थापित।
- ❖ उच्च शिक्षा संस्थानों का मूल्यांकन और रैंकिंग।
- ❖ पारदर्शिता और गुणवत्ता सुधार को बढ़ावा।

**कार्य:** उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता का मूल्यांकन एवं ग्रेडिंग।

**प्रभाव:** गुणवत्ता सुधार और प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन।

**नई शिक्षा नीति 2020 और आयोगों की भूमिका**

- ❖ बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली।
- ❖ शोध को बढ़ावा देने हेतु नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF) की स्थापना।
- ❖ स्नातक शिक्षा में लचीलापन (Major-Minor system)।
- ❖ व्यावसायिक और कौशल आधारित शिक्षा पर जोर।
- ❖ डिजिटल शिक्षा और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स को प्रोत्साहन।

NEP 2020 ने उच्च शिक्षा आयोग (HECI) की अवधारणा दी है।

**इसके अंतर्गत चार स्वायत्त इकाइयाँ होंगी –**

- **NHERC** नियामक कार्यों के लिए।
- **NAC** प्रत्यायन और गुणवत्ता मूल्यांकन।
- **HEGC** अनुदान एवं वित्त पोषण।
- **GEC** शिक्षा के मानकों का निर्धारण।

**शिक्षा पर आयोगों और समितियों का प्रभाव (Impact Analysis)**

**सकारात्मक प्रभाव**

- शिक्षा प्रणाली अधिक संगठित और संरचित हुई।
- गुणवत्ता नियंत्रण के मानक विकसित हुए।
- अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को बढ़ावा मिला।
- शिक्षा का लोकतांत्रिकरण हुआ—सभी वर्गों तक पहुँच सुनिश्चित हुई।
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय शिक्षा की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ी।
- शिक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, लचीलापन, बहु-विषयक शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा
- शिक्षा की गुणवत्ता और मानक में सुधार।
- समानता और समावेशी शिक्षा पर बल।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा की दिशा में प्रगति।

**नकारात्मक पहलू**

- नीतियों के क्रियान्वयन में असमानता।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर।

- ❖ कुछ आयोगों की सिफारिशें केवल कागज़ों तक सीमित।
- ❖ वित्तीय संसाधनों की कमी।
- ❖ अत्यधिक नौकरशाही और प्रक्रियात्मक जटिलताएँ।
- ❖ ग्रामीण और शहरी संस्थानों के बीच असमानता।
- ❖ निजी संस्थानों में व्यावसायीकरण का खतरा।
- ❖ आयोगों की सिफारिशों का धीमा क्रियान्वयन।

**चुनौतियाँ और सीमाएँ**

- ❖ **राजनीतिक हस्तक्षेप** : शिक्षा आयोगों की स्वतंत्रता प्रभावित होती है।
- ❖ **संसाधनों की कमी** : अनुसंधान और प्रयोगशालाओं का अभाव।
- ❖ **गुणवत्ता और मात्रा का संतुलन** : शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के साथ उसकी गुणवत्ता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण।
- ❖ **डिजिटल डिवाइड** : ऑनलाइन शिक्षा सभी तक समान रूप से नहीं पहुँच पा रही।
- ❖ उच्च शिक्षा में समान अवसर उपलब्ध कराना।
- ❖ गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान और पेटेंट को बढ़ावा।
- ❖ डिजिटल डिवाइड कम करना।
- ❖ शिक्षा का वाणिज्यीकरण रोकना।
- ❖ आयोगों और समितियों के बीच समन्वय की कमी।

**सुधार एवं सुझाव**

- ❖ आयोगों की सिफारिशों को लागू करने में दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति होनी चाहिए।
- ❖ शिक्षा में पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) को बढ़ावा देना।
- ❖ अनुसंधान कार्यों के लिए अधिक वित्तीय सहायता।

- ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा संस्थानों का विस्तार।
- वैश्विक स्तर पर सहयोग बढ़ाना ताकि भारतीय शिक्षा अंतरराष्ट्रीय मानकों तक पहुँचे।
- आयोगों और समितियों की सिफारिशों को समयबद्ध लागू किया जाए।
- ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के विस्तार पर जोर।
- अनुसंधान को उद्योग से जोड़ा जाए।
- विदेशी विश्वविद्यालयों के सहयोग से वैश्विक मानक अपनाए जाएँ।
- उच्च शिक्षा में तकनीकी साधनों का समुचित उपयोग।

**निष्कर्ष (Conclusion)**

शिक्षा आयोगों और समितियों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को दिशा देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। राधाकृष्णन आयोग से लेकर नई शिक्षा नीति 2020 तक, इन निकायों ने शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का साधन बनाने हेतु ठोस प्रयास किए हैं। यद्यपि कुछ सीमाएँ और चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा आयोग और समितियाँ शिक्षा के भविष्य को आकार देने वाली महत्वपूर्ण कड़ी हैं। भारत में उच्च शिक्षा आयोगों और समितियों ने शिक्षा व्यवस्था के उत्थान और सुधार में अमूल्य योगदान दिया है। इनकी सिफारिशों से शिक्षा प्रणाली को नई दिशा, गुणवत्ता और दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है। यद्यपि कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं, परंतु समयानुकूल सुधार और नीतिगत प्रयासों से भारत वैश्विक स्तर पर शिक्षा का अग्रणी केंद्र बन सकता है। NEP 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो उच्च शिक्षा को अधिक लचीला, नवाचारी और समावेशी बनाने की क्षमता रखती है।

- **संदर्भ (References in APA Style)**


- Government of India. (1949). *Report of the University Education Commission* (Radhakrishnan Commission). Ministry of Education.
- Government of India. (1966). *Report of the Education Commission (Kothari Commission)*. Ministry of Education.
- Ministry of Human Resource Development. (1986). *National Policy on Education 1986*. New Delhi: Government of India.

- Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
- University Grants Commission (UGC). (2023). *Annual Report*. New Delhi: UGC.
- All India Council for Technical Education (AICTE). (2022). *Handbook of AICTE*. New Delhi: AICTE.
- National Assessment and Accreditation Council (NAAC). (2021). *Accreditation Manual for Higher Education Institutions*. Bangalore: NAAC.
- Tilak, J. B. G. (2018). *Education and Development in India: Critical Issues in Public Policy and Development*. Palgrave Macmillan.
- Agarwal, P. (2009). *Indian Higher Education: Envisioning the Future*. SAGE Publications.
- Altbach, P. G., & Jayaram, N. (2010). *Higher Education in India: The Context of Globalisation*. New Delhi: Springer